بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 14 Agust 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(ज़हूर महीने की तिथि 14,1405 हश)

शुक्र गुज़ारी के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलै. का अमली नमूना और आप अलै. की तअलीमात।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 14.08.2026
محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूरः अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमायाः पिछले ख़ुत्बो में शुक्रगुज़ारी के इज़हार के लिए आँहज़रत ﷺ की तालीम और उसवा बयान किया था। शुक्रगुज़ारी के उस आला मअयार को आप स. के सच्चे सेवक और इस ज़माने के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने किस तरह समझा तथा अपने अमल से घर में बच्चों को कैसे समझाया, इसके विषय में कुछ हवाले पेश करूंगा।

हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम नेअमतों पर ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करने की अहमियत और हिकमत बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि जब इंसान किसी आला मर्तबा को हासिल कर लेता है तो फिर वो मग़रूर हो जाता है हालांकि वो इस अर्से में बहुत कुछ नेक काम कर सकता है और मानव जाति को लाभ पहुंचा सकता है। ख़ुदा तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है لَئِنۡ شَکَرۡتُمۡ لَاَزِیۡدَنَّکُمۡ। अगर तुम मेरा शुक्र अदा करो तो मैं अपने अहसानात को और भी ज़ियादा करता हूँ और अगर तुम कुफ़्र करो तो फिर मेरा अज़ाब भी बड़ा सख़्त है।

यानी इंसान पर जब ख़ुदा तआला के अहसानात हों तो उस को चाहिए कि वो उस का शुक्र अदा करे और इंसानों की बेहतरी का ख़याल रखे और अगर कोई ऐसा न करे और उल्टा ज़ुल्म शुरू कर दे तो फिर ख़ुदा तआला उस से वो नेअमतें छीन लेता है और अज़ाब नाज़िल करता है।

फिर आप अलै. फ़रमाते हैं कि सब से मुक़द्दम अल्लाह का शुक्र करो जिसने हमें ज़िंदगी दी, सेहत दी, तंदरुस्ती बख़्शी, अमन दिया और इशाअत-ए-दीन के सामान मुहैया किए हैं और हक़ीक़त में सच्ची बात यही है कि अगर ख़ुदा तआला की नेअमतों का शुक्र करना चाहें तो हरगिज़ मुमकिन नहीं कि उस ख़ुदा की मेहरबानी और अहसानों का शुमार कर सकें।

फिर एक मौक़े पर आपं फ़रमाते हैं कि मुसलमानों को अल्लाह तआला का बहुत शुक्र करना चाहिए कि जिसने उन को एक ऐसा दीन बख़्शा है जो इल्मी और अमली तौर पर हर एक क़िस्म के फ़साद और मकरूह बातों और हर एक नौअ की क़बाहात से पाक है। अगर इंसान ग़ौर और फ़िक्र से देखे तो उस को मालूम होगा कि वाक़ई तौर पर तमाम महामिद और सिफ़ात का मुस्तहिक़ अल्लाह तआला ही है और कोई इंसान या मख़लूक़ वाक़ई और हक़ीक़ी तौर पर हम्द-ओ-सना (महिमा एवं प्रशंसा) का मुस्तहिक़ नहीं है। अगर इंसान बग़ैर किसी क़िस्म की ग़रज़ की मलोनी के देखे तो उस पर बदीही तौर (स्पष्ट रूप से) पर खुल जावेगा कि कोई शख़्स जो मुस्तहिक़-ए-हम्द क़रार पाता है वो या तो इस लिए मुस्तहिक़ हो सकता है कि किसी ऐसे ज़माने में जबकि कोई वजूद न था और न किसी वजूद की ख़बर थी वो उसका पैदा करने वाला हो या इस वजह से कि ऐसे ज़माने में कि कोई वजूद न था और न मालूम था कि वजूद और बक़ा-ए-वजूद और हिफ़्ज़-ए-सेहत और क़ियाम-ए-ज़िंदगी के लिए क्या क्या असबाब ज़रूरी हैं और उसने वो सब सामान मुहैया किए हों या ऐसे ज़माने में कि उस पर बहुत सी मुसीबतें आ सकती थीं उस ने रहम किया हो और उस को महफ़ूज़ रखा हो। और या इस वजह से मुस्तहिक़-ए-तारीफ़ हो सकता है कि मेहनत करने वाले की मेहनत को ज़ाया न करे और मेहनत करने वालों के हक़ूक़ पूरे तौर पर अदा करे। अगरचे बज़ाहीर उजरत करने वाले के हक़ूक़ का देना मुआविज़ा है लेकिन ऐसा शख़्स भी मोहसिन हो सकता है जो पूरे तौर पर हक़ूक़ अदा करे। ये सिफ़ात आला दर्जे की हैं जो किसी को मुस्तहिक़-ए-हम्द-ओ-सना बना सकती हैं। अब ग़ौर करके देख लो कि हक़ीक़ी तौर पर इन सब महामिद का मुस्तहिक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है जो कामील तौर पर इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है और किसी में ये सिफ़ात नहीं हैं।फिर इस्लाम की निशात-ए-सानिया और सिलसिला-ए-अहमदिया के क़ियाम पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने की तरफ़ तवज्जो दिलाते हुए हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

ऐ दानिशमंदो! तुम इस से तअज्जुब मत करो कि ख़ुदा तआला ने इस ज़रूरत के वक़्त में और इस गहरी तारीकी के दिनों में एक आसमानी रोशनी नाज़िल की और एक बंदे को मसलहत-ए-आम (मानव कल्याण) के लिए ख़ास कर के बग़रज़-ए-आला-ए-कलमा-ए-इस्लाम व इशाअत-ए-नूर-ए-हज़रत-ए-ख़ैरुल-अनाम और ताईद-ए-मुसलमानों के लिए और नीज़ उनकी अंदरूनी हालत के साफ़ करने के इरादे से दुनिया में भेजा। तअज्जुब तो इस बात में होता कि वो ख़ुदा जो हामी-ए-दीन-ए-इस्लाम है, जिसने वादा किया था कि मैं हमेशा तालीम-ए-क़ुरआनी का निगहबान रहूँगा और इसे सर्द और बे-रौनक़ और बे-नूर नहीं होने दूँगा, वो इस तारीकी को देख कर और इन अंदरूनी और बीरूनी फ़सादों पर नज़र डाल कर चुप रहता और अपने उस वादे को याद न करता जिस को अपने पाक कलाम में मुअक्कद तौर पर बयान कर चुका था। फिर मैं कहता हूँ कि अगर तअज्जुब की जगह थी तो ये थी कि उस पाक रसूल ﷺ की ये साफ़ और खुली खुली पेशगोई ख़ता जाती जिस में फ़रमाया गया था कि हर एक सदी के सर पर ख़ुदा तआला एक ऐसे बंदे को पैदा करता रहेगा कि जो उस के दीन की तजदीद करेगा... सो ये तअज्जुब का मक़ाम नहीं बल्कि हज़ार शुक्र का मक़ाम और ईमान और यक़ीन के बढ़ाने का वक़्त है कि ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल-ओ-करम से अपने वादे को पूरा कर दिया और अपने रसूल की पेशगोई में एक मिनट का भी फ़र्क़ पड़ने नहीं दिया और न सिर्फ़ पेशगोई को पूरा कर दिया बल्कि आइंदा के लिए भी हज़ारों पेशगोइयों और ख़वारिक़ (भविष्यवाणी एवं चमत्कार) का दरवाज़ा खोल दिया। अगर तुम ईमानदार हो तो शुक्र करो और शुक्र के सजदे बजा लाओ कि वो ज़माना जिस का इंतज़ार करते करते हमारे बुज़ुर्ग आबा (पूर्वज) और बे-शुमार रूहें इसके शौक़ में सफ़र कर गईं वो तुम ने पा लिया। अब इस की क़द्र करना या न करना, इस से फायदा उठाना या न उठाना तुम्हारे हाथ में है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं! आज के मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार होते हुए अल्लाह तआला के भेजे हुए को मान लें और अपने आप को वहदत की लड़ी में पिरो लें ताकि मुश्किलात से बच सकें।

एक मुतलाशी-ए-हक़ को मुख़ातिब करते हुए हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा का शुक्र करो कि उसने ऐन वक़्त पर दस्तगीरी (सहायता) फ़रमाई है और इस सिलसिले को क़ाइम किया। इस लिए तुम को मुनासिब है कि इस फ़ज़्ल को जो तुम को दिया गया है, ज़ाए (नष्ट) न करो और अदब की निगाह से देखो और इस मदद और नुसरत की जो तुम्हें दी गई है क़द्र करो... अल्लाह तआला का ये फ़ज़्ल है कि अल्लाह तआला के भेजे हुए को लोग शिनाख़्त कर लेते हैं। पस तुम पर ये ख़ुदा तआला का बहुत बड़ा अहसान है कि उस ने तुम्हें ये क़ुव्वत अता की है और शिनाख़्त की आँख बख़्शी है।

फिर आपं ने मियां अब्दुल हक़ साहब की मिसाल दी कि किस तरह अल्लाह तआला ने उन की दस्तगीरी फ़रमाई और उन को ऐश की जगह से निकाल कर हक़ क़बूल करने की तौफ़ीक़ दी। हज़रत मियां अब्दुल हक़ साहब क़सूर के रहने वाले थे। तालिब-ए-इल्म थे और ईसाई हो गए। फिर हज़रत साहबं की बाज़ तहरीरों को पढ़ कर आपं की ख़िदमत में ख़त लिखा कि वो इस्लाम की हक़्क़ानियत और सदाक़त को अमली रंग में देखना चाहते हैं। आपं ने फ़रमाया कि कम अज़ कम दो माह के लिए क़ादियान आ कर रहें। चुनांचे उन्होंने आने का इरादा किया। उन को बहुत से लोगों ने रोका और नसीहत की कि क़ादियान मत जाओ। एक ने गाली भी दी। लेकिन इन तमाम बातों पर ख़ुदा का फ़ज़्ल ग़ालिब आ गया और उन को खींच लाया।

सिलसिला-ए-अहमदिया में शामिल होने वालों के इख़लास व मोहब्बत का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

मैं इस बात के इज़हार और इस के शुक्र अदा करने के बग़ैर नहीं रह सकता कि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल-ओ-करम ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, मेरे साथ तअल्लुक़-ए-उख़ुव्वत पकड़ने वाले और इस सिलसिले में दाख़िल होने वाले, जिस को ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से क़ाइम किया है, मोहब्बत और इख़लास के रंग से एक अजीब तर्ज़ पर रंगीन हैं, न मैंने अपनी मेहनत से बल्कि ख़ुदा तआला ने अपने ख़ास अहसान से ये सिद्क़ से भरी हुई रूहें मुझे अता की हैं... सब से पहले मैं अपने एक रूहानी भाई के ज़िक्र करने के लिए दिल में जोश पाता हूँ जिन का नाम उन के नूर-ए-इख़लास की तरह नूर दीन है। मैं उन की बाज़ दीनी ख़िदमतों को जो अपने माल-ए-हलाल के ख़र्च से इआला-ए-कलमा-ए-इस्लाम के लिए वो कर रहे हैं, हमेशा हसरत की नज़र से देखता हूँ कि काश वो ख़िदमतें मुझसे भी अदा हो सकतीं।

ऐ रबुल आलमीन तेरे अहसानों का मैं शुक्र नहीं कर सकता। तू निहायत ही रहीम व करीम है और तेरे बे-ग़ायत मुझ पर अहसान हैं। मेरे गुनाह बख़्श ता मैं हलाक न हो जाऊँ। मेरे दिल में अपनी ख़ास मोहब्बत डाल ता मुझे ज़िंदगी हासिल हो और मेरी पर्दा पोशी फ़रमा और मुझसे ऐसे अमल करा जिन से तू राज़ी हो जाए। मैं तेरे वज्ह-ए-करीम के साथ इस बात से पनाह माँगता हूँ कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर वारिद हो। रहम फ़रमा और दुनिया और आख़िरत की बलाओं से मुझे बचा कि हर एक फ़ज़्ल-ओ-करम तेरे ही हाथ में है। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस जगह मैं इस शुक्र के अदा करने से रह नहीं सकता कि जिस तरह ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताईद में अपनी वही के ज़रीए से कुफ़्फ़ार को मुलज़िम किया और फ़रमाया कि ये मेरा नबी इस आला दर्जे का नेक चाल-चलन रखता है कि तुम्हें ताक़त नहीं कि इस की गुज़श्ता चालीस बरस की ज़िंदगी में कोई ऐब और नक़्स (कमी और त्रुटी) निकाल सको। बाजूद इस के कि वो चालीस बरस तक दिन रात तुम्हारे दरम्यान ही रहा है। और न तुम्हें ये ताक़त है कि इस के आला ख़ानदान में जो शराफ़त और तहारत और रियासत और अमारत का ख़ानदान है, एक ज़र्रा ऐबगीरी कर सको। फिर तुम सोचो कि जो शख़्स ऐसे आला और अतहर और अनफ़स ख़ानदान में से है और उसकी चालीस बरस की ज़िंदगी जो तुम्हारे रो-ब-रो गुज़री गवाही दे रही है कि इफ़्तिरा और दरोग़ बानी उस का काम नहीं है तो फिर इन ख़ूबियों के साथ जबकि आसमानी निशान वो दिखला रहा है और ख़ुदा तआला की ताईद उस के शामिल-ए-हाल हो रही हैं और तालीम वो लाया है जिस के मुक़ाबिल पर तुम्हारे अक़ाइद सरासर गंदे और नापाक और शिर्क से भरे हुए

हैं तो फिर इस के बाद तुम्हें इस नबी ﷺ के सादिक़ होने में कौन सा शक बाक़ी है। इसी तौर से ख़ुदा तआला ने मेरे मुख़ालिफ़ीन और मुकज़्ज़िबीन को मुलज़िम किया है। चुनांचे बराहीन-ए-अहमदिया के पृष्ठ 512 में मेरी निसबत ये इलहाम है जिस के शाया करने पर बीस बरस गुज़र गए और वो ये है: وَلَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ यानी इन मुख़ालिफ़ीन को कह दे कि मैं चालीस बरस तक तुम में ही रहता रहा हूँ और इस मुद्दत-ए-दराज़ तक तुम मुझे देखते रहे हो कि मेरा काम इफ़्तिरा और दरोग़ नहीं है और ख़ुदा ने नापाकी की ज़िंदगी से मुझे महफ़ूज़ रखा है।

आपं अपने घर में बच्चों में भी शुक्र गुज़ारी के जज़्बात पैदा करने की कोशिश फ़रमाते। एक रिवायत आती है कि एक मर्तबा आपं ने घर में बच्चों को कहानी सुनाई कि एक गंजा और एक अंधा था। अल्लाह ने उनके पास एक फ़रिश्ता भेजा। उसने गंजे से पूछा तू क्या चाहता है। उसने कहा कि मेरे सर पर बाल हों और मुझे माल-ओ-दौलत मिल जाए। फ़रिश्ते ने उस के सर पर हाथ फेरा और उस के बाल उग गए और उसको माल-ओ-दौलत मिल गई। फिर फ़रिश्ता अंधे के पास आया। उस ने अंधे से पूछा कि तू क्या चाहता है। उसने कहा मेरी आँखें हों और मुझे माल-ओ-दौलत मिल जाए। फ़रिश्ते ने उस के सर पर हाथ फेरा तो उस की बीनाई ठीक हो गई और उस को भी माल-ओ-दौलत मिल गई। कुछ अर्से बाद अल्लाह तआला ने उनको आजमाने के लिए फ़रिश्ते को दोबारा ग़रीब आदमी के रूप में भेजा। उस ने जा कर गंजे से सवाल किया तो उस ने तुर्श रूई से, बड़ी बद मिज़ाजी से जवाब दिया और झड़क दिया और कहा कि चल तेरे जैसे बहुत फ़कीर फिरते हैं। फ़रिश्ते ने उस के सर पर हाथ फेरा तो वो दोबारा गंजा हो गया और माल जाता रहा। फिर वो अंधे के पास आया और सवाल किया। अंधे ने कहा सब कुछ अल्लाह तआला ही ने दिया है और उसी का माल है तुम ले लो। फिर अल्लाह ने उस को और माल-ओ-दौलत दी। सो अज़ीज़ बच्चों तुम भी याद रखो कि:

ख़ुदा तआला की दी हुई नेअमतों का शुक्र करो और उस की क़द्र करो और सवाली को न झड़को। ख़ैरात करना अच्छी बात है और सवाली को देना चाहिए इससे ख़ुदा ख़ुश होता है और नेअमत ज़ियादा करता है।

फिर एक मौक़े पर आपं ने हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहबँ के बारे में फ़रमाया: हज़रत हकीम मौलवी साहब अल्लाह तआला की नेअमतों में से एक नेअमत हैं। उनके ज़रीए कई ग़रीबों का इलाज हो जाता है। इलाज तो दूसरों का होता था मगर शुक्र आपं कर रहे थे कि इंसानी ख़िदमत कर रहे हैं और इंसानों को फायदा पहुँच रहा है।

ख़ुतबा-ए-जुमा के आख़िर पर हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने चंद मरहूमीन का ज़िक्र फ़रमाया:

- मुकर्रम हाफ़िज़ शहबाज़ अहमद साहब मुरब्बी-ए-सिलसिला आइवरी कोस्ट। मुकर्रम यलनंगाने मोमनी साहब बुरकीना फ़ासो शहीद, मुकर्रम यहिया सोमारी साहब ऑफ़ माली शहीद, मुकर्रम सिराजुल हक़ कुरैशी साहब - नाएब अफ़सर जलसा सालाना रब्वा, मुकर्रम लावाल तय्यब साहब मुअल्लिम-ए-सिलसिला नाइजीरिया और मुकर्रम मास्टर ग़फ़ूर अहमद साहब सांगला कनाडा का ज़िक्र-ए-ख़ैर फ़रमाते हुए दुआ-ए-मग़फ़िरत फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131